Dr. Swarnim Ghosh
(Assistant Professor)
[Mathematical Economics]
Dept. Of Economics
Govt. Degree college
Jakhhini, Varanasi
****
Mob: 9451218739
****
E-mail:
swarnimghosh@gmail.com
****

ECONOMICS (अर्थशास्त्र)

बी.ए - प्रथम वर्ष (सेमेस्टर – प्रथम)

(कौशल विकास पाठ्यक्रम)

प्रश्न पत्र का नाम –रचनात्मक कौशल के गांधीवादी आयाम

क्रेडिट -०३

इकाई- प्रथम (सम्पूर्ण सिलेबस)

ई –कंटेंट 1.10

(महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आलोक में तैयार कौशल विकास पाठ्यक्रम)

स्वघोषणा

(Disclaimer/Self-Declaration)

“यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है | आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग प्रतिबंधित है | सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नही करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे | इस कंटेंट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है |”

“The content is exclusively meant for academic purposes and for enhancing teaching and learning. Any other use for economic/ commercial purpose is strictly prohibited. The user of this content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted to advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge.”

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर2020

प्रश्न पत्र का नाम –रचनात्मक कौशल के गांधीवादी आआम

इकाई – प्रथम

सिलेबस :

इकाई प्रथम : रचनात्मक कार्यक्रम

कौमी एकता , अस्पृश्यता निवारण , शराबबंदी , खादी, दुसरे ग्रामोद्योग , गावों की सफाई , नई या बुनियादी तालीम , बड़ों की तालीम , स्त्रियाँ , आरोग्य के नियमों की शिक्षा , प्रांतीय भाषाएँ , राष्ट्रभाषा , आर्थिक समानता , किसान , मजदूर , आदिवासी , कुष्ठ रोगी और विद्यार्थी |

रचनात्मक कार्यक्रम :

गाँधी जी का रचनात्मक कार्यक्रम आदर्श –समाज निर्माण का साधन भी है और साध्य भी | इसका उद्देश्य समाज परिवर्तन के द्वारा एक नये समाज की रचना करना है , आन्दोलन करना इसका उद्देश्य कभी –भी नहीं रहा है |गांधी जी ने सन १९४१ में अपनी पुस्तक " रचनात्मक कार्यक्रम " में स्वयं कहा है कि –" लड़ाई के द्वारा देश जीता जा सकता है , किन्तु उसे समृद्ध तो रचनात्मक कार्य के द्वारा ही किया जा सकता है |" इस तरह रचनात्मक कार्यक्रम समाज परिवर्तन के लिए सामूहिक प्रयत्न और लोक शिक्षण का कार्य करता है | गाँधी जी के अनुसार यदि समाज , रचनात्मक कार्यक्रम के उद्देश्य और फायदों के बारे में जानेगा तो अवश्य समाज में सम्पूर्ण क्रांति एवं समाज परिवर्तन की लहर फैलने लगेगी |
गांधी जी ने अपने उन्नीस सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रम को पूर्ण स्वराज का कार्यक्रम कहा है जोकि न केवल राजनैतिक वरन सामाजिक एवं आर्थिक स्वतंत्रता के साथ सत्य और अहिंसा से निर्मित है | इस प्रकार, इस कार्यक्रम के द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों को साम्प्रदायिक एकता या कौमी एकता , आर्थिक समानता तथा राष्ट्रीय भाषा के द्वारा पास लाने के साथ ही अस्पृश्यता , नशाखोरी , बेरोजगारी , निचले वर्गों का पिछडापन जैसे कि; छोटे किसान , मजदूर , जनजाति , कुष्ठ रोगी जैसी सामाजिक समस्याओं को भी दूर किया जा सकता है | इस प्रकार गाँधी जी के अनुसार रचनात्मक कार्यक्रम ही पूर्ण स्वराज या मुकम्मल आजादी को हासिल करने का सच्चा और अहिंसक रास्ता है | उसकी पूरी –पूरी सिद्धि ही सम्पूर्ण स्वतंत्रता है | गांधी जी ने कुल १८ प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रम समाज परिवर्तन हेतु दिए हैं बाद में १९ वे क्रम में गो सेवा को भी इसमें जोड़ दिया गया |

1. कौमी एकता या साम्प्रदायिक एकता :

गांधी जी के अनुसार एकता का मतलब राजनीतिक एकता से नहीं है जिसे थोपी जाए | उनके अनुसार एकता का अर्थ है – दिल से दिल का अटूट बंधन | इस प्रकार की एकता प्राप्त करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि-प्रत्येक भारतीय चाहे वह जिस किसी धर्म का हो उसे अपने व्यक्तित्वा के द्वारा ही प्रतिनिधित्व देना चाहिए | हिन्दू , मुसलमान, ईसाई , पारसी , यहूदी आदि सभी हिन्दू व गैर हिन्दुओं को करोड़ों में से प्रत्येक हिन्दुस्तानी के साथ तादाम्य स्थापित करना चाहिए | इसे साकार करने के लिए प्रत्येक भारतीय को अपने से दुसरे धर्म के लोगों के साथ व्यक्तिगत मित्रता स्थापित करना चाहिए | उसके ह्रदय में दुसरे धर्म के लिए भी उतना सम्मान होना चहिये जितना स्वयं के धर्म के लिए है |

2. अस्पृश्यता निवारण :

गांधी जी ने अस्पृश्यता निवारण के सम्बन्ध में अत्यंत ही महत्वपूर्ण बातें कही हैं ; उनके अनुसार –जहाँ तक हरिजनों का सवाल है , प्रत्येक हिन्दू को अस्पृश्यता की भावना का परित्याग कर उनसे समभाव की भावना रखते हुए उनके जीवन के निकृष्ट एकाकीपन में उनसे मित्रता की भावना रखनी चाहिए |उन्होंने इसे स्वराज तक पहुँचने का संकल्पित मार्ग बताया जो अत्यंत कठिन और दुरूह है | परन्तु हरिजनों के साथ मित्रता की भावना की अभिवृद्धि को ही उन्होंने स्वराज प्राप्त करने का मूलमंत्र बताया |1.

3. शराबबंदी या मद्ध निषेध :

गांधी जी ने एक बार कहा था कि यदि उन्हें भारत का तानाशाह सिर्फ एक घंटे के लिए बना दिया जाये तो वे बिना मुआवजा दिए सभी शराब की दुकानों को बंद कर देंगे | उन्होंने आगे कहा है कि –यदि हमें अहिंसा के द्वारा अपने उद्देश्य तक पहुंचना है तो हमें उन लाखों स्त्री –पुरुषों का भाग्य सरकार पर नहीं छोड़ देना चाहिए जो नशे के गुलाम हैं |
उनके अनुसार,
इस बुराई को दूर करने के लिए चिकित्सा जगत के लोग महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं |इस बदलाव को लाने के लिए महिलाओं एवं विद्यार्थियों के सामने अवसर है | प्रेम से सेवा करके वे नशा खोरों को इस बुराई को छोडनें के लिए बाध्य कर सकते हैं | पूरी तरह से स्थायी एवं स्वस्थ्य मुक्ति को भीतर से प्राप्त किया जा सकता है अर्थात आत्म –शुद्धि के द्वारा समाज के रचनात्मक कार्यकर्ता कानूनी रोक को सफल बना सकते हैं |

4.खादी :

गाँधी जी के अनुसार खादी पुरे देश में आर्थिक स्वतंत्रता एवं समानता के आरम्भ को दर्शाता है | खादी को प्रत्येक भारतीय महिला एवं पुरुष को अपने सभी निहितार्थों के साथ अपनाना चाहिए | इसका अर्थ है – सम्पूर्ण स्वदेशी मानसिकता , भारत में जीवन की सभी आवश्यक बातो को ग्रामीणों के श्रम एवं ज्ञान से ढूंढनेके लिए दृढ –प्रतिज्ञ होना | इसका मतलब है वर्तमान में चल रही पश्चिमी अन्धाधुधिकरण की प्रक्रिया को उलट देना | कहने का अर्थ है . गांधी जी के अनुसार भारत के आधा दर्जन शहर गांवों का शोषण कर उन्हें नष्ट करके उन पर निवास के बदले , यदि गांवों को आत्म-निर्भर बनाएं तो वे स्वाभाविक रूप से शहरों की ही नहीं परन्तु भारत से बाहर भी लाभदायक साबित होंगें | इसके लिए लोगों की मानसिकता में क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है | गाँधी जी के अनुसार –" खादी भारतीय मानवता , उसकी आर्थिक स्वतंत्रता , समानता का प्रतिक है |"
खादी मानसिकता से अर्थ उत्पादों का विकेन्द्रीयकरण और जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं का आवंटन से होता है जिसमें सभी ग्रामों , को अपनी आवश्यकता के अनुसार और उससे कुछ प्रतिशत अधिक उत्पन्न करना चाहिए जिससे शहरों की भी आवश्यकता पूरी हो सके |

5. दूसरे ग्रामोद्योग या ग्रामीण उद्योग :

गांधी जी के अनुसार ये खादी से अलग पायदान पर खड़े हैं |इसमें स्वैच्छिक श्रम के लिए बहुत अवसर नहीं हैं |ग्रामों की अर्थव्यवस्था जरुरी ग्रामोद्योग के बिना अधूरी है जैसे ; हाथ से पीसना, हाथ से कुटना , साबुन बनाना , कागज़ बनाना , माचिस बनाना , चमड़े को रंगना एवं तेल निकालना आदि |सभी भारतीय को ग्रामों के उत्पादों का उपयोग करना अपनी प्रतिष्ठा बना लेना चाहिए वे चाहे जहाँ उपलब्ध हों |यदि मांग होगी तो इसमें कोई शक नहीं कि हमारी सभी आवश्यकताएं ग्रामों से पूरी हो सकती है |जब हम ग्रामीण मानसिकता वाले बन जायेंगे तब हम पश्चिम की नकल नहीं चाहेंगे या मशीनों द्वारा निर्मित उत्पाद नहीं चाहेंगे परन्तु हम एक सच्ची राष्ट्रीय चाहत का विकास कर लेंगें जहाँ नये भारत की ऐसी छवि होगी जिसमें गरीबी , भुखमरी एवं बेरोजगारी नहीं होगी |

6. गावों की सफाई या ग्रामीण स्वच्छता :

गांधी जी के अनुसार बुद्धिमता का श्रम के मध्य अलगाव के फलस्वरूप ग्रामों की आपराधिक रूप से उपेक्षा हुई है और धरती पर सुंदर ग्राम फैले होने की बजाय हमारे यहाँ गोबर के ढेर हैं |अनेक ग्रामों तक पहुँचने वाले मार्ग बहुत बुरा अनुभव कराते हैं | प्रायः हम आँख एवं नाक बंद कर लेते हैं –क्यूंकि चारो तरफ ऐसी गन्दगी व दुर्गन्ध फैली रहती है |राष्ट्रीय एवं सामाजिक स्वच्छता का हमारे बीच कोई गुण नजर नहीं आता |हम स्नान तो करते हैं , परन्तु हमें यह भी ध्यान नहीं रहता हम कुएं , टंकी एवं जिसके किनारे हम निस्तार कर रहे हैं उसे ही गन्दा कर रहे हैं | गांधी जी ने हमारे ग्रामों और नदी के किनारे की दयनीय स्थिति को एक बुराई कहा, जिसकी गंदगी बीमारीयों को जन्म देती है |

7. नयी या बुनियादी तालीम या आधारभूत शिक्षा :

गाँधी जी के अनुसार इस शिक्षा के द्वारा हमारे ग्रामीण आदर्श ग्रामीणों में परिवर्तित हो जायेंगे | इसे सैद्धांतिक रूप से ग्रामीणों के लिए ही तैयार किया जाता है |इसकी प्रेरणा ग्रामों से ही मिली है | स्वराज वर्ग संरचना के निर्माण में उसकी नीवं से ही बच्चों की उपेक्षा नहीं की जा सकती है | विदेशियों के राज में उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों पर ध्यान दिया है | प्राथमिक शिक्षा की रुपरेखा भारत के ग्रामों एवं शहरों की आवश्यकता के अनुरूप नहीं बनाई गयी है | आधारभूत शिक्षा पद्धति जोकि चाहे वे गांवों के हों या शहरों के हों , भारत का निर्माण करती है | यह शारीरिक एवं मानसिक विकास करता है और बच्चे को धरातल से जोड़े रखता है तथा उज्जवल भविष्य को साकार करने के लिए बच्चों को प्रेरित करता है |

8. प्रौढ़ शिक्षा या बड़ों की तालीम :

गांधी जी के अनुसार यदि उनको प्रोढ़ शिक्षा का प्रभार सौंप दिया जाता तो वे सर्वप्रथम प्रौढ़ छात्रों के मस्तिष्क को उनके देश की महानता एवं विशालता के लिए खोलते | गाँधी जी के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा का अर्थ –प्रौढ़ों को सही राजनितिक शिक्षा देना है | यह बिना किसी भय के प्रदान की जा सकती है |अब बहुत देर हो चुकी है कोई अधिकारी इस प्रकार की शिक्षा में हस्तक्षेप करे , परन्तु यदि हस्तक्षेप होता है तो इस प्राथमिक अधिकार के लिए लड़ाई होनी चाहिए जिसके बिना स्वराज असंभव है |

9. स्त्रियाँ या महिलाएं :

गांधी जी के अनुसार , महिला का हमेशा रीति-रिवाजों और कानूनों के द्वारा दमन हुआ है |जिसके लिए पुरुष उत्तरदायी हैं और जिसके बनाने में महिलाओं का कोई हाथ नहीं है | अहिंसा आधारित जीवन की योजना में महिला को अपना भाग्य तय करने का उतना ही अधिकार प्राप्त है जितना की पुरुष को | अहिंसात्मक समाज में प्रत्येक अधिकार पिछले कार्य के निष्पादन से ही आरम्भ होता है | सामाजिक व्यवहार के नियम आपसी सहयोग एवं परामर्श से ही बनाना चाहिए |ये कभी भी उपर से थोपे नहीं जा सकते | पुरुष कभी स्त्री के प्रति अपने व्यवहार के वास्तविक रूप में नहीं रहता | वह स्त्री को मित्र एवं सहयोगी न समझकर हमेशा अपने को उनका मालिक समझता है | पुरुषों के पास यह अवसर है कि वे भारत की स्त्रिओं को ऊँचा स्थान देने के लिए हाथ बढ़ाएं | पुराने समय से स्त्रियाँ गुलामी की स्थिति में रही है | यह पुरुष की जिम्मेदारी है कि वे स्त्रियों की अपनी स्थिति का अहसास कराएँ और पुरुषों के बराबर की भूमिका करने के लिए प्रोत्साहित करें | गाँधी जी के अनुसार, यदि मन बना लिया जाए तो यह क्रान्ति बहुत आसान है | पुरुषों को अपने घरों से शुरुआत करनी चाहिए | पत्नियों को गुड़ियों के समान और विलासिता की वास्तु न समझकर उनके साथ सम्मानजनक सहयोगी का व्यवहार करना चाहिए | जिन स्त्रियों ने शिक्षा ग्रहण नहीं की है यदि संभव हो सके तो उन्हें शिक्षित करें | इसी प्रकार का व्यवहार आवश्यक बदलाव के साथ माताओं एवं बेटियों पर भी किया जाना चाहिए |

10. आरोग्य के नियमों की शिक्षा :

गांधी जी के अनुसार अपने को स्वस्थ रखने की कला और स्वच्छता का ज्ञान अपने आप में अध्ययन का एक पृथक विषय है | एक सुव्यवस्थित समाज में नागरिकों को स्वास्थ्य एवं स्वच्छता का ज्ञान होना अति आवश्यक शर्त होनी चाहिए | आशा की जाती है की ऐसे समाज में उन्हें ज्ञान होता है और वे आरोग्य के नियमों का पालन भी करते हैं | यह बात बिना किसी संदेह के स्थापित की जा सकती है कि स्वच्छता और स्वास्थ्य के नियमों की उपेक्षा एवं अज्ञानता अनेक बीमारियों के लिए उत्तरदायी होती है | हमारे बीच ऊँची मृत्यु –दर एवं अत्यधिक गरीबी इत्यादि जैसी समस्याएं विद्धमान हैं | परन्तु यह कम की जा सकती है यदि लोगों को उचित रूप से स्वास्थ्य और स्वच्छता की शिक्षा दी जाए | “मेन्स साना इन कोंरपार सानो “ शायद मानवता के लिए प्रथम नियम है | एक स्वस्थ्य शरीर , स्वस्थ्य मन , एक सच्चा प्रमाण है | मन और शरीर में एक अटूट सम्बन्ध व्याप्त होता है | यदि हमारे पास स्वस्थ मन होंगें तो हम समस्त हिंसा को त्याग कर , स्वाभाविक रूप से स्वास्थ्य के नियमों का पालन कर हम बिना किसी प्रयास के स्वस्थ्य शरीर के मालिक बन जायेंगे |

11.प्रांतीय या स्थानीय भाषाएँ :

गांधी जी के अनुसार हमारी मातृभाषा के बदले हमारे अंग्रेजी भाषा के लिए प्रेम ने पढ़े –लिखे और राजनैतिक विचारधारा के लोगों तथा जन –साधारण के मध्य गहरी खाई बना दी है | भारत की भाषाओं ने अपनी समृद्धि खो दी है | हम अपनी मातृभाषा में दुरूह विचार अभिव्यक्त करने की नाकाम कोशिश करते हुए लड़खड़ाते हैं | विज्ञान से सम्बंधित शब्दों के लिए समरूपी के शब्द नहीं मिलते | इसका परिणाम खेदजनक है | भारत की महान भाषाओँ की उपेक्षा करके हमने अपने देश की उपेक्षा की है | इस कारण से लोग स्वराज की रचना में अपना कोई योगदान नहीं दे सकते | अहिंसा पर आधारित स्वराज में यह निहित है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता आन्दोलन में अपना सहयोग देना पड़ेगा | लोग इसे पूरी तरह से नहीं कर सकते जब तक कि वे सभी पायदानों के उसके पुरे अर्थ को साथ न समझ लें और जब तक कि प्रत्येक सीढ़ी की व्याख्या , उनकी अपनी भाषा में न की गयी हो |तब तक लक्ष्य की प्राप्ति असंभव होगा |

12. राष्ट्रभाषा :

गाँधी जी के अनुसार पुरे भारत के सहसंबंध के लिए हमें भारतीय जन समूह से ऐसी भाषा की आवश्यकता है जो अधिक से अधिक लोग जानते एवं समझते हों तथा जिसे दुसरे लोग सरलता से सीख सकें | ऐसी विवादों से परे भाषा हिंदी है | यह उत्तर के हिन्दू और मुसलमानों द्वारा बोली एवं समझी जाती है | जब यह उर्दू के तरीके से लिखी जाती है तब उर्दू कहलाती है |
१९२५ में जन साधारण की भाषा समस्त भारत की बोली को हिन्दुस्तानी कहा गया और उस समय से कम से कम सैद्धांतिक रूप से हिन्दुस्तानी राष्ट्र भाषा हिंदी ही है | १९२० से भारतीय भाषाओं के महत्व को पहचान दिलाने का प्रयास किया गया जिससे की लोगों को राजनीति का ज्ञान दिया जा सके तथा पुरे भारत की सामान्य बोली जिसे राजनैतिक विचारों वाला भारत सरलता से बोल सके और जिसे विभिन्न क्षेत्रों के लोग बड़ी जनसभाओं में समझ सके | इस प्रकार की राष्ट्र भाषा व्यक्ति को इस योग्य बनाये कि वह उसे भलीभांति समझ व बोल सके तथा दोनों ही लिपियों को लिख सके |

13. आर्थिक समानता :
गांधी जी के अनुसार अहिंसात्मक स्वतंत्रता की कुंजी आर्थिक समानता है जिसका उद्देश्य धनी एवं मजदूरों के मध्य सतत चलने वाली संघर्ष को समाप्त करना है |

इसका तात्पर्य यह है कि कुछ धनी लोगों को दूसरों के समकक्ष लाना जिनके पास देश के धन का अधिकतम हिस्सा है और अधभूखे और नग्न लोगों को उपर उठाना है | एक अहिंसात्मक सरकार का सपना साकार तब तक संभव नहीं हो सकता जब तक कि धनि और करोड़ों भूखे लोगों के मध्य गहरी खाई है | एक दिन एक खुनी आन्दोलन अवश्य होगा , जब तक कि धन का स्वयं अधित्याग न हो और वह सत्ता जो धन से प्राप्त है का भी त्याग न हो और इनका उपयोग सभी की भलाई के लिए हो |

14. कृषक / किसान :

गांधी जी के अनुसार रचनात्मक कार्य तब तक सम्पूर्ण नहीं है जब तक की स्वराज में किसानों की भूमिका न हो | स्वराज एक विशालकाय संरचना है | उसके निर्माण के लिए करोड़ों हाथों को काम करना होगा | किसानों में से कृषक वर्ग बहुत बड़ा है | जब उन्हें अपनी अहिंसा की शक्ति का आभास होगा तब इस धरती पर कोई शक्ति उनका सामना नहीं कर सकेगी | उनका उपयोग सत्ता की राजनीति के लिए नहीं होना चाहिए | गाँधी जी उसे अहिंसा के तरीके का विरोधी बताते हैं | गांधी जी कहते हैं कि ; वे जो किसानों को संगठित करने की मेरी पद्धति जानना चाहते हैं उन्हें चंपारण का सत्याग्रह आन्दोलन का अध्ययन करना चाहिए जहाँ भारत में पहली बार सत्याग्रह हुआ और इसका परिणाम सभी जानते हैं | यह एक जन आन्दोलन बन गया था जोकि आरंभ से अंत तक अहिंसात्मक था |

15. मजदूर या श्रमिक :

गांधी जी के अनुसार अहमदाबाद मजदूर यूनियन एक प्रतिमान है जिसका अनुकरण सम्पूर्ण भारत कर सकता है | इसका आधार अहिंसा , शुद्धता और सरलता है | अपने कार्यकाल में उसे कभी भी पीछे मुड़के नहीं देखना पड़ा| यह बिना किसी बहाने एवं दिखावे के सामर्थ्यवान होती चली गयी | उसके अपने अस्पताल एवं पाठशालाएं हैं , उन बच्चों के लिए जिनके माता –पिता मिल में कार्यरत हैं | प्रोढ़ों के लिए शिक्षा , प्रिंटिंग प्रेस , खादी डिप्पो और रिहायशी मकान हैं | सभी लोग वोट देने वाले हैं जोकि चुनावों में भाग लेते हैं | उनका नाम वोटर सूची में दर्ज है | इस संगठन ने कभी किसी पार्टी एवं राजनीति में भाग नहीं लिया | वह शहर की म्युनिसिपल नीति को प्रभावित करता है | उसके खाते में ऐसी सफल हडतालों का उदाहरण है जो पूर्णतः अहिंसात्मक थी | मिल मालिक और मजदूरों ने अपने आपसी सम्बन्ध , स्वयं मध्यस्थता करके स्थापित किये हैं | गाँधी जी ने कहा कि ; यदि मुझे मौका मिले तो मैं भारत के सभी मजदूर संगठनों को अहमदाबाद प्रतिमान के समान चलाऊंगा |

16. आदिवासी :

गांधी जी के अनुसार आदिवासी की सेवा भी इस रचनात्मक कार्यक्रम का हिस्सा है | वैसे इस कार्यक्रम में उनका क्रम १६वा है , परन्तु उनका महत्व कम नहीं है |हमारा देश इतना बड़ा है और उसमें इतनी विभिन्न जातियां हैं कि हम में से सबसे उत्तम व्यक्ति को भी उनकी परिस्थितियों और उनके विषय में जानकारी नहीं हो सकती |

जैसे ही व्यक्ति को इस विषय में पता चलता है , तो यह समझ में आता है कि एक राष्ट्र की कल्पना करना बहुत कठिन है , जब तक कि प्रत्येक इकाई को एक दुसरे के साथ एकाकार होने की जीवित चेतना न हो |

17. कुष्ठ रोगी :
गाँधी जी के अनुसार कोढ़ एक ऐसा शब्द है जिससे दुर्गन्ध आती है | मध्य अफ्रीका के बाद शायद भारत इसका घर है | फिर भी ये हमारे समाज का हिस्सा है यधपि इसकी ऊँचे एवं संपन्न व्यक्ति को कोई आवश्यकता नहीं , परन्तु सामाजिक तौर पर उन्हें कुष्ट रोगियों पर ध्यान देने की आवश्यकता है जबकि उनकी जान -बुझ कर उपेक्षा की जाती है | गाँधी जी कहते हैं ; मैं ऐसे लोगों को हृदयहीन कहने के लिए बाध्य हूँ | यदि हम अहिंसा के परिप्रेक्ष्य में देखें तो ज्यादातर मिशनरी लोगों को इनकी सेवा का श्रेय जाता है |

18. विद्यार्थी :
गाँधी जी के अनुसार जो विद्यार्थी हैं , इन्हीं युवकों और युवतियों में से भविष्य के नेताओं का उदय होगा | दुर्भाग्य से ये अनेक प्रकार की बातों से प्रभावित होकर कार्य करते हैं | विद्यार्थियों के लिए गांधी जी की आचार संहिता निम्नलिखित हैं :

1. विधार्थियों को राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए , वे विद्यार्थी हैं , एवं खोजी हैं | वे राजनीतिज्ञ नहीं हैं |
2. उन्हें राजनैतिक हडतालों में भाग नहीं लेना चाहिए | उनके अपने आदर्श हो सकतें हैं परन्तु उन्हें अपनी श्रद्धा अपने आदर्श की अच्छी बातों का अनुकरण करना चाहिए न कि हडतालों में सम्मिलित होकर |
3. उन्हें त्यागमय कटाई वैज्ञानिक तरीके से करनी चाहिए | उनके औजार हमेशा साफ़ –सुथरे अच्छी हालत में एवं व्यवस्थित होनी चाहिए | यदि संभव हो तो उन्हें अपनी औजारों को स्वयं बनाना सीखना चाहिए |
4. उन्हें खादी का उपयोग करना चाहिए और हमेशा ग्रामीण उत्पादों का उपयोग करना चाहिए न कि विदेशी या मशीन द्वारा निर्मित वस्तुओं का |
5. उन्हें अपने व्यक्तित्व में तिरंगे की भावना को स्थान देना चाहिए और अपने ह्रदय में अस्पृश्यता और साम्प्रदायिकता की भावना को नहीं रखना चाहिए | उन्हें दुसरे धर्म के विद्यार्थियों से और हरिजनों से सच्ची मित्रता विकसित करना चाहिए जैसा कि वे अपने भाई और बंधु के साथ करते हैं |
6. अपने घायल पड़ोसी को प्राथमिक चिकित्सा देना सुनिश्चित करना चाहिए और अपने पास के गावों में सफाई करके ग्रामीण बच्चों व प्रोढ़ों को निर्देश देना चाहिए |
7. वे राष्ट्र भाषा हिन्दुस्तानी सीखेंगे , उसकी दो प्रकार की बोली और लिपि , जिससे उन्हें हिंदी व उर्दू वाले तथा नागरी व उर्दू लिपि समझ में आये व अपनापन महसूस हो |

8. वे जो भी नया सीखें उसका अनुवाद अपनी मातृभाषा में और अपने आस –पास के गांवों में उसका प्रसार करे |
9. वे गुप्त रीति से कुछ न करें तथा अपने लेन-देन में खुलापन रखें | वे एक शुद्ध व संयम भरा जीवन जीयेंगे, समस्त डर को त्यागकर अपने कमजोर साथी विद्यार्थियों के बचाव के लिए सदैव तत्पर रहेंगे और अहिंसात्मक व्यवहार के द्वारा दंगे –फसाद को समाप्त करने के लिए प्राणों की बाजी लगा देंगे | उनका व्यवहार अपनी साथी छात्राओं के प्रति पुर्णतः सच्चा व साहसी होगा |

उपर्युक्त रचनात्मक कार्यक्रमों के अलावा गाँधी जी ने **गौ सेवा को भी रचनात्मक कार्यक्रम माना है** तथा उनके अनुसार गाय एक दया की मूर्ति है | मनुष्य गाय के माध्यम से सभी जीवों से तादात्म्य स्थापित कर सकता है |मनुष्य के विकास में गाय का संरक्षण एक अद्भुत घटना है | धार्मिक भावनाओं के अलावा , मनुष्य के विकास में गाय की भूमिका अद्वितीय है |यदि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है तो गाय कृषि की रीढ़ है | गो वध पाप है जिसका निषेध पूर्ण रूप से होना चाहिए और गाय प्रजाति के संरक्षण और विकास के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए |

निष्कर्ष के रूप में यही कहा जा सकता है कि रचनात्मक कार्य का प्रारंभ समाज के निम्नतम स्तर से होना चाहिए | लेकिन उसका अंतिम उद्देश्य समग्र समाज की उन्नति ही होनी चाहिए |इन कार्यों की पहचान इस बात से हो उसमें जन भागीदारी कितनी है |

सन्दर्भ :

1. गांधी , एम् .के . (रिप्रिंट २००५), कंसट्रकटिव प्रोग्राम ; इट्स मिलिंग एंड प्लेस , नवाजीवन , अहमदाबाद |

2. गांधी , एम्.के.रिप्रिंट (१९५४), सर्वोदय , नवाजीवन अहमदाबाद |

3. गंगराडे के.डी . (२००५), गांधीवादी एप्रोच टू डेवलपमेंट एंड सोशल वर्क , कांसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी , नई दिल्ली |

4. गंगराडे , के.डी .(२००१) , कंसट्रकटिव प्रोग्राम्स , गांधी जी स्मृति एंड दर्शन समिति , नई दिल्ली |

5. गांगुली , बी .एन . (१९७८) , गांधीजी सोशन फिलोसोफी, विकास पब्लिशिंग हाउस , नई दिल्ली |

6. गुप्ता , एस .एस.(१९७६) , द इकनोमिक फिलोसोफी ऑफ़ महात्मा गांधी , अशोक पब्लिशिंग हाउस , दिल्ली |

7. कुमारप्पा , जे .सी . (१९५१)गांधीवादी इकनोमिक घाट, वोरा एंड की बोम्बे |